© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

अभिराज राजेन्द्र मिश्र विरचित रूपरूद्रीयम : एक आकलन

सीमा तिवारी
भाोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय
जमुनीपुर कोटवा, इलाहाबाद।

शोध आलेख सार – बीसवी भाताब्दी के नाट्क रचनाकारों में 'अभिराज' डॉ0 राजेन्द्र मिश्र का स्थान अद्वितीय है। डॉ0 मिश्र ने संस्कृत साहित्य की प्रत्येक विद्या (महायकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नाट्य एवं कथा) को अपने प्रतिभा के प्रकाश से प्रकाशित किया हैए एवं इन विधाओं से सम्बंधित उच्चस्तरीय रचनायें दी है। आधुनिक साहित्य जगत मे जो उनका योगदान है वह अतुलनीय अविस्मरणीय तथा प्रेरणादायक है।

मुख्य शब्द – भाताब्दी, संस्कृत, साहित्य, अतुलनीय, अविस्मरणीय, प्रेरणादायक।

बीसवी भाताब्दी के नाट्क रचनाकारों में 'अभिराज' डॉ0 राजेन्द्र मिश्र का स्थान अद्वितीय है। डॉ0 मिश्र ने संस्कृत साहित्य की प्रत्येक विद्या (महायकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य, नाट्य एवं कथा) को अपने प्रतिभा के प्रका ा से प्रकाि ात किया है, एवं इन विधाओं से सम्बंधित उच्चस्तरीय रचनायें दी है। इनके नाट्य साहित्य मे अतीत है तो वह भी गौरवशाली हैं। वर्तमान है तो वह भी सत्यम् शिवम्ए एवं सुन्दरम के हाशियें मे है तथा इनके सहारे एक स्वर्णिम भविश्य की अभिवाञछा है। डॉ0 मिश्र महाकवि कालिदास की परम्परा के कवि हैं। इनकी रचनाओं मे प्रसाद गुण का अधिक्य है तथा वैदर्भी रीति का प्रधान्य है। उपमा एव रूपक अलंकार उनके साहित्य में अधिक दिखाई पड़ते है ये वस्तुतः व्यञजना के कवि है। मिश्र जी की बीसवीं सदी की प्रमुख नाट्क (उकांकी संग्रह) रचनाएं निम्न है। नाट्क पञनगत्यम्, अकिञचनकाञचनम् नाट्क पञचामृतम् चतुव्यथीयम्, रूपरूद्रीयम् एवं नाट्य सप्तपदम आदि। उपर्युक्त सभी नाट्य रचनाओ में रूपरूद्रीयम मिश्र जी की एक महत्वपूर्ण रचना है। यह उत्तर प्रदेश शासन द्वारा पुरस्कृत कृति है। मिश्र जी की यह कृति वैजयन्त प्रकाशन द्वारा 1986 ई0 में प्रकाशित हुयी। नाम के अनुसार ही इस संकलन में कुल एकादश (रूद्रसंख्यक) एकांकी है। इस संकलन में सामाजिक

मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक तथा पौराणिक कोटि की रचनायें समाहित की गयी है।

रूपरूद्रीयम् की प्रथम नाट्य एकांकी अभिश्ट मुपायनम् सामाजिक कोटि की रचना है, इसमें दहेज समस्या का वर्णन है। सेठ दीवान चन्द्र अपने सुयोग्य पुत्र आलोक का विवाह धनकुबेर सेठ तुलसीराम की कान्वेण्ट ि ाक्षिता कन्या डाली से करना चाहते है ताकि इसी बहाने वह तुलसीराम की फैक्टरियों का स्वामित्व पा सके परन्तु आलोक की मॉ मिवला दहेज के सर्वथा विरूद्ध है और वह अपने बेटे का एक चिर परिचित सर्वगुण सम्पन्न कन्या वन्दना से करना चाहती है जो उसकी कन्या भोभा की ही सहपाठिनी है और अन्त में जीत विमला की ही होती है और वह वन्दना को गले लगाकर बोलती है।

बत्से। भील सौन्दर्य करूणायाः मूर्तिरसित्वम्
त्वां सम्प्राप्त गृहमिवं, पूजामन्दिर भविश्यति।
त्व सदुगुणा एवं में अतुलनीय यौतकम्।
मम् अभिश्ट उपायनम्।।

इस संकलन की द्वितीय रचना नात्मानमवसादयेत् मे लूट औ चोरी की समस्या का वणन है इसमें चोर के हृदय परिवर्तन की घटना का वर्णन है वह एक गरीब के घर चोरी के उदे य से जाता है तथा यह वाक्य सुनकर उसका विचार बदल जाता है।

अचर्वितया रूशं गिरति कोपना पोशिणी
उपायधृतमत्कुणा हसति दारूण मञ्चिका।
विभर्ति भयमाकुला निहतमूसला कण्डिनी
गृहे क्षपितेवैभवे किमिवभामक संकटम्।।

इस संकलन की तृतीय रचना स्वप्नाज्जागरणंवरम् एक मनो वैज्ञानिक एकांकी है।

वि वविद्यालय की नवनियुक्त अध्यापिकाओ के अधकचरे ज्ञान तथा उनके अन्य सद्गुणों पर केन्द्रित एक प्रतीकात्मक व्यडग्य है, जो सम्भवतः उन्हे नहीं रूचेगा। परन्तु लोकधर्मिता का पक्षपाती रचनाकार बाध्य है इसके लियें। प्रत्यक्ष के लिये प्रमाण की आव यकता नहीं होती।

'स्वप्नाज्जागरणं वरन्' की स्त्रीपात्र बलाका एक ऐसी है रूपगर्विता प्राध्यापिका है, आदिभाक, नमोवाक, परिपाक, विपाक तथा कुम्भीपाक ये पॉच प्रतीक प्रमुख है जिन्हे माध्यम बनाकर बलाका की सम्पूर्ण अध्यापनावधि के उत्तरोतर पतनोन्मुख कालखण्डों की अनुभव सवेद्यमीमांसा प्रस्तुत की गयी है–

नेत्रे सम्पुटिते कुवेल ललिते स्वप्नमिश्रय विभ्रती

विस्तीर्णञ्च कपोलमण्डलमिद पूर्णन्दु ौभावहम्।
अव्यक्ताक्षरबन्धुरोऽय धरो भन्ये सुपुप्तावधि
लोक ि ाक्षयाति प्रमोहविकल सौन्दर्य ाास्त्र नवम्गे।।

इस सुंकलन की चतुर्थ रचना 'पुनमेंलनम्' है। यह एक सामाजिक कोटि की

एकांकी है जिसने दस्यु समस्या का वर्णन है। इसमें भूफल और भाोभन दो मित्रो की कहानी है, इसमें भूपाल कैसे भूपा नामक डाकू बनता है और इसकी मुलाकात आगे चलकर अपने मित्र भाोभन से होती है और इसकी मार्मिक कहानी सुनकर भाोभन भी रो पड़ता है, और वह भूपाल को समर्पण के लिए तैयार कर लेता है तथा दोनो का पुनर्मिलन आनन्द मे बदल जाता है और भाोभन मुस्कुराते हुये भुफल से कहता है कि चलो अपनी हेमामालिनी भाभी के हाथो से गरमागरम चाय पी लो भूपाल कालेज के दिनो मे राजलक्ष्मी नामक छात्रा को हेमामलिनी कहके छेड़ता था जिसका भाोभन के द्वारा विरोध किया जाता है, और बाद मे राजलक्ष्मी का विवाह भाोभन से हो जाता है, और अन्त मे भाोभन कहता है कि– हेमामालिनी भवित राजलक्ष्मी। भूपाल न त्वया साडपमानिता भवेन्न मया वारित न च साडस्मतप्रणय पयोनिधिमज्जिता स्यात्। सर्वभेवेदं नियतिप्रेरित घटना चक्रम। आवयोरेकीकरणस्थय श्रेयस्हवाभुगच्छति भूपाल। अवायों पुनर्मलनस्यानन्द राजलक्ष्मी रेवानुभदिव्यति।।

परन्तु एक दिन कोट से लौटते समय वह अपने बच्चे को वहॉ देख लेते है और उसे बहुत भला बुरा कहते है। किन्तु जब उसी गन्दी बस्ती का एक लड़का सोमघर जो कि सिन्धु का मित्र है सिन्धु का एक्सीडेन्ट हो जाने पर उसकी जान बचाता है। सोनघर के सद्व्यवहार से भवानी दत्त की आखे खुल जाती है। वह उसे गुदडी का लाल मान लेतू है और उसकी शिक्षा का सारा भार अपने उपर ले लेते है अब उन्हे गरीबो से बड़ी सहानुभुति हो जाती है। सोमू कन्यामाणिक्यमेव वर्तते। इदानी। न में घ्रणा दरिद्र बसति प्रति। अद्य प्रभुत्दहं त्वनत्राभ्या संसार द्रस्यामि।। कुटुम्ब रक्षण इस संकलन की छठवी रचना है। यह एक ऐतिहासिक एकांकी नाटक है। इसमे राव हम्मीरसिंह एवं मीर महिमा भााह का दु

मिले लूट के माल के बटवारे को लेकर महिमा ााह आदि पॉच मुगल सैनिको का खिलजी के भाई उलूग खॉ से झगड़ा हो गया। महिमा ााह भागकर राव हम्मीर की भारण मे आ जाता है। भारणागत

महिमाशाह ने स्वयं अपने हाथो अपने परिवार का वधकर डाला और वह भी केसरिया पहनकर राव हम्मीर के साथ युद्धभूति मे चल पड़ा। प्रस्तुत नाट्क एकांकी महिमा ाह के उसी महान् चरित्र पर आधारित है। एकांकी के कुछ पात्र कवि कल्पित है। इस एतिहासिक नाट्क रचना का प्रमुख भलोक है।

यददृहासोद्धत वायु वेगात तृणीकृता भूगृदमेय भाक्तिः।
अनन्ततारा पथ कोण लीना पुराण गायात्वमिता जयेत्यः।।

इस संकलन की अगली रचना 'राजराजौदर्यम' है। यह भी एक एतिहासिक एंकाकी है। इसका कथानक सम्राट राजराज चोल से सम्बंधित है इस एकांकी की रचना लेखक न 09 जनवरी 1986 को चोल दं ा की कीर्तिस्थली तजापुरी देखने के प चात् की ।

वृहदी वर मन्दिर चोल वं ा के प्रतापी सम्राट राजराज ने सन् 1009 ई0 मे बनवाया था। इस देवालय की ऊचाई 200 फिट है। इसका इसका आकार 800 फिट लम्बा है तथा 400 फिट चौड़ा है। ग्रेनाइट पत्थरो से निर्मित यह अदभुत मन्दिर सम्भवतः भारत की प्राचीनतम कलाकृति है। विमान मण्डल के उपर स्थापित स्तूपाकार पत्थर 80 टन का है यह अकेला एक पत्थर इस सम्राट की अलगी नाम की एक वृद्वा ने दिया था। जिसके बदले राजराज ने उसे एक सरोवर तथा बाग दिये थे। यही ऐतिहासिक तथ्य इस एकांकी का मूल स्रोत है। पनगल गॉव की बृढ़िया अलगी की इस एकांकी में पणार्गल ग्राम की आलकी है। आलकी एवं राजराज के अतिरिक्त भोश समस्त पात्र कल्पित है। राजराज इतना विनम्र एव उदार था कि वह ि ालाखण्ड मांगने के लिए स्वयं आलकी के पास गया। उसने बल प्रयोग नहीं किया। इस घटना से राजराजे वर की उदारता एवं सदा ायता का बोध होता है। इस रचना में बैतालिक द्वारा बहुत ही सुन्दर बात कही गयी।

सामुद्री लोलवेला कलपति नितरां यद्य ाः सामगान।
कावेरी पूततोया वि ादयति गुणान्याय धर्मार्जत्राद्यान्।।
सन्धते नारिकेलीवनरमणपटुः कीर्तिगन्ध समीरो।
वीरोडसौ राजराजो भवतु भुविनोवो देवराजोडतिराजः।।

इस संकलन की अगली रचना को विजयते नैव ज्ञातम्'' है। इसका कथानक राजराज चोल एवं मालवे वर भोज से सम्बद्व है। यह एक ऐतिहासित एकांकी है इस रचना मे चोल तथा मालव क्रम ाः तन्जौर तथा धार के निवासी है दोनो अपने–अपने प्रदेश की श्रेश्ठता सिद्ध करना चाहते है। मालव कहता है मेरे दे ा

मे तो कभी एक सामान्य जुलाहा भी उत्कृश्ठ संस्कृत कवि हुआ करता था। चोल इसका उत्तर देते हुये कहता है कि मेरे प्रदेश में तो एक मामूली स्थपति (राजगीर) भी त्रिकालदर्शी ज्योतिर्विद होता था।

दोनो दृश्यो की प्रस्तुति के बाद निर्णायक समिति के अध्यक्ष डॉ0 चण्डिका प्रसाद भुक्ल जी दर्शकों को निर्णय सुनाते हैं। यह निर्णय विचित्र किन्तु रोचक है। वह निर्णय है। कौन जीता ज्ञात नहीं। इस रचना की नान्दी बहुत ही मनोहर है।

दत्ते मुक्ति मृतेभ्यस्त्रिपुरहर पुरी चेहव्यली का भिमानः
नो पश्यामोडत्रचित्रं प्रभवति हि यतर शुम्भु शूलाधिरूढ़ा।
धन्यं मन्ये प्रयांग कलुशमलहरी निर्झरी निजराणां
भक्तैस्सन्दृश्टमात्रा हरिपुरवसतिं यत्र हारीकरोति।।

रूपरूद्रीयम संकलन की अगली रचना 'रक्ताभिशेकम्' है यह भी एक ऐतिहासिक एकांकी है। इसमें अमृतसर नगर द ामे ा इण्टर कालेज के वार्शिकोत्सव के अवसर पर 'पुश्पाहुति' नामक नाटक का मन्चन हो रहा है जिसे देखने क लिये कालेज का छात्र हेमेन्द्र अपने पिता कृपाल सिंह तथा मॉ अमृता कौर के साथ जाता है। नाटक मे सिख सम्प्रदाय के दसवे गुरू गोविन्द सिंह का आत्मोत्सर्ग प्रस्तुत किया जाता है।

श्री रामे पुरूशोत्तमे विलसति प्रीतिर्मदीयाऽनघा
श्री कृश्ण रमते नटीव घिशणा लीलामनोरञ्जिनी।
साक्षादेव शिवोऽहमस्मि परया भाक्त्या लसद्विग्रहः
अन्यक्किं कथयाति सिंह लिनया दुर्गापरा देवता।।

नाट्य ाा से निकलने के बाद हेमेन्द्र सिखों के अतीत गौरव की प्र ासा करते हुये उनकी खालिस्तान याचना पर प्र नचिन्ह लगाता है। उसका पिता कृपाल सिंह उसे डाटता है परन्तु मॉ समर्थन करती है। और स्वार्थान्ध सिक्खो के अराश्ट्रीय आन्दोलन को भला बुरा कहती है।

इस कहानी के माध्यम से गुरू रामदास, गुरू अर्जुन देव, गुरू तेगहबादुर गुरू गोविन्द सिंह के भौर्य, पराक्रम तथा सदगुणों का परिचय दिया गया है।

इस एकांकी के द्वितीय दृ य मे हेमेन्द्र के द्वारा पृथक खालिस्तान के मॉग को अनुचित बताया गया है।

आस्थाय प्रहरीव रक्षणपरो योऽभूत्सदा संकटे

सर्वस्वं व्यपहाय कीर्तिमतुला भेक्षे सुरक्षाग्रणीः।

यो बाह्याक्रमणेशु भोतुमथना नाल्प भा ाकानि ां

सोऽयं पञ्चनद प्रदे ाविभवः सम्पद्यते दुर्द ााम्।।

'रूपरूद्रीयम' संकलन की अगली एकांकी क यपाभि ापम पौराणिक कोटि की रचना है। आर्चार्य कुन्तक की प्रकरण वक्ररण का निदर्शन भूत यह एकांकी महाकति कालिदास–प्रणीत अभिज्ञान ाकुन्तलम् नाटक का एक साहित्यिक विवर्त प्रस्तुत करता है।

इसका सारां ा यह है कि महाराज दृश्यन्त को महर्शि दुर्वासा ने स्मृतिभ्रश्ट होने का भााप नहीं दिया, बाल्कि यह अपराध स्वयं महर्शि का यप (कण्व) से अनजाने मे हो गया।

प्रस्तुत नाटक मे का यप् महर्शि का क्रोध देखिये वे अनजाने मे अपने जामाता को ही साधारण बहेलिया समझ कर श्राप दे रहे है।

क्षणमपि नवशे स्यातस्य बुद्धि प्ररूठा,

नयविनयदिहिनोडसौ प्रभतैडस्तु तूर्णम्।

न खलु भवतु लोके तस्य कीर्ति प्रशंसा

भक्तु भुवनभर्ता क्षमाधिपो लुब्धको वा।।

रूपरूद्रीयम की अन्तिम एकांकी एक एद् विप्रा बहुधा वदन्ति। यह भी एक पौराणिक कोटि की एकांकी है। इस रचना मे महाभारत के द्रोपती स्वयवर और विवाह की कथा है। स्वयवर मे अपने धनुविद्या कौ ाल से द्रोपदी को वधु बनाकर अर्जुन भाइयों के साथ अपनी पर्णकुटी मे लौटते है। युधिश्ठिर आहलादव ा माता कुन्ती को सुचित करते है ि कवह भिक्षा लाये है भिक्षा मे उनका आ ाय राज कन्या द्रौपदी से था। परन्तु माता कुन्ती बिना कुछ सोचे विचारे से ही कह देती है सब लोग बॉट कर भोग करो।

ऐसा कहने के प चात् वह धर्म संकट मे पड़ जाती है। कि भला एक द्रौपदी जो धर्मतः अर्जुन की भार्या थी सभी पाण्डवो की पत्नी कैसे बन सकती थी। संकट की इस घड़ी मे अकस्मात भगवान कृश्ण द्वैपायन आते है वह त्रिकालद र्ी है, धमैतत्व के पारखी है वह द्रपद और कुन्ती को समझाते है कि ई वरीय प्रेरण से ही कुन्ती ने सत्य कहा है, महर्शि व्यास बताते है कि वस्तुतः द्रौपदी देवराज इन्द्र की पतिव्रता पत्नी सची है और पॉचो पाण्डव समदेव रूप मे इन्द्र ही है। वे एक ही चैतन्य की पॉच पृथक अभिव्यक्तियॉ है। द्वैपायन द्वारा बहुत सुन्दर सत्य का वर्णन यहॉ पर किया गया है।

सुधा धारा ज्योत्सना विधुनमन हेतुर्न च मल
अलभ्यं सौरभ्य मृगमदमथेन्धे न च जनिः।
मधुच्छिश्ठ स्वादैमदयतितरां लोकमखिल,
प्र ास्तिर्वस्तुना भवति गुणमूलैव जगति।।

इस प्रकार मिश्र जी का यह संकलन रूपरूद्रीयम आज के वर्तमान परिवेश मे बहुत ही श्रेश्ठ उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस संकलन की चार एकांकी सामाजिक कोटि की है। जो वर्तमान सामाजिक कुरीतियो पर प्रहार करती है। वर्तमान नाट्य रचना भौली का जो नया ..... उनके द्वारा मिला है तथा आधुनिक साहित्य जगत मे जो उनका योगदान है वह अतुलनीय अविस्मरणीय तथा प्रेरणादायक है।

सन्दर्भ सूची

1. रूपरूद्रीयम– वैजयन्त प्रका ान, इलाहाबाद 1986 अभिश्ट मुपयनम एकांकी– पुश्ठ
2 एवं 8
2. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 17 भलोक 7 (नात्मानमवसादयेत)
3. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 23 भलोक –7 (स्वप्नज्जागरण वरम)
4. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 46 (पुनर्मेलनम)
5. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 58 (कन्यामाणिक्यम्)
6. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ (60–61) भलोक –2 (कुटुम्ब रक्षणम्)
7. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 74 भलोक – 7 (राजराजौदार्यम)
8. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 82–83 भलोक–2 (को विजयते नैव ज्ञातम)
9. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ (104–105) भलोक–8 (रक्ताभिशेकम)
10. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 105 भलोक – 9 (रक्ताभिशेकम)
11. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ 114 भलोक – 7 (क यपाभि ापम)
12. रूपरूद्रीयम – पृश्ठ –122, भलोक
13. साहित्यकल्पतरूः अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रका ान, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2010 पुश्ठ–83